Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **26.06.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

ये दिन जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पाक तबदीलियों के पैदा करने के और दुआ की क़बूलियत के, अल्लाह तआला ने हमें प्रदान किए हैं उनमें इस ओर ध्यान देने की आवश्कयता है। जिस जिसको, जिस जिस बात पर गर्व है अथवा जो चीज़ हमें हमारी विनम्रता को बढ़ाने में बाधक है अथवा जो चीज़ हमारे वातावरण में हमारे कारण व्याकुलता तथा उपद्रव का कारण बन सकती है, उसे हमें अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हुए, उससे सहायता मांगते हुए दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को क़ीलो क़ाल (केवल बातें) तक सीमित नहीं होना चाहिए, यह वास्तविक उद्देश्य नहीं। आत्मा की पवित्रता एंव सुधार आवश्यक है जिसके लिए अल्लाह तआला ने मुझे नियुक्त किया है। इस प्रकार आप चाहते हैं कि जमाअत में बदलाव आए। जब आपने फ़रमाया कि केवल क़ील-ओ-क़ाल तक सीमित नहीं होना चाहिए इसका अर्थ यह है कि केवल बातों तक ही सीमित न रहो। यह न हो कि जहां अपना स्वार्थ देखो वहीं अपनी बात को बदल लो, अपने नैतिक स्तरों को स्थापित न रख सको, बल्कि ईमान और अल्लाह तआला की बातों के अनुसार कर्म तथा अपनी आत्मा की शुद्धि और उसे सदैव पवित्र रखना, अपने जीवन में अनिवार्य बना लो। और जब यह होगा तभी आपके बैअत में आने का कर्त्तव्य पूरा होगा और इसी उद्देश्य के लिए आपको अल्लाह तआला ने भेजा है।

अतः एक अहमदी को याद रखना चाहिए कि आपकी बैअत का हक़ अदा करने के लिए अल्लाह तआला के आदेशों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है उनके अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है और हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता हमारा लक्ष्य हो। पिछले ख़ुत्बे में मैंने बताया था कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम दुआओं की क़बूलियत के दृश्य देखना चाहते हो तो فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ इसके अनुसार कर्म करो, मेरे आदेशों को स्वीकार करो। यह अल्लाह तआला के आदेशों को स्वीकार करना क्या है? यह हमारी समस्त प्रतिभाओं के साथ अल्लाह तआला के आदेशों का पालन है, अपने जीवन को ख़ुदा तआला के आदेशानुसार व्यतीत करना है। अतः रमज़ान के इस विशेष वातावरण में हमें अपना मूल्यांकन करना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के आदेशों को किस सीमा तक अपने जीवन का अंश बना रहे हैं। यदि यह नहीं तो यह केवल हमारे ज़बानी दावे होंगे कि हम अल्लाह तआला के आदेशों को स्वीकार करते हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में असंज्य आदेश दिए हैं इन आदेशों को सदैव हमें सामने लाते रहना चाहिए ताकि आत्मिक सुधार की ओर सदा हमारा ध्यान रहे। इस समय उनमें से जो अल्लाह तआला ने आदेश दिए हैं, कुछ बातें पेश करता हूँ जो एक ओर हमारे आत्मिक सुधार में अपनी भूमिका निभाते हैं तो दूसरी ओर समाज में प्यार, मुहब्बत तथा शांति का वातावरण पैदा करते हैं। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ سَلٰمًا अनुवाद- और रहमान के सच्चे बन्दे वे होते हैं जो धरती पर शांति पूर्वक चलते हैं विनम्रता एंव सज्ञान के साथ चलते हैं, घमंड नहीं करते और जब मूर्ख लोग उनसे सम्बोधित होते हैं तो वे लड़ते नहीं बल्कि कहते हैं कि हम तो तुम्हारे लिए सलामती की दुआ करते हैं।

अतः संक्षिप्त रूप से इस नैतिक एंव आध्यात्मिक इंक़लाब की विद्या का चित्रण कर दिया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए थे और आपके मानने वालों न, आपके सहाबा ने

इन आचरणों को अपने भीतर पैदा किया। वह ज़माना जब दुनिया अंधेरों में डूबी हुई थी तथा शैतान के पंजों में जकड़ी हुई थी। स्वाभिमान एंव घमंड तथा उपद्रव ने दुनिया को विनाश के गढ़े में फ़ेंका हुआ था। उस समय इंसान को उच्च स्तरीय नैतिकता तथा विनयता एंव विनम्रमा का न केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पाठ पढ़ाया अपितु ऐसे मनुष्य पैदा हो गए जो इस आयत के अनुसार चलती फिरती मूरत थे। आज भी दुनिया की यही स्थिति है और इस ज़माने में भी अल्लाह तआला ने

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भेजकर ऐसे इबादुर्रहमान लोगों की जमाअत बनाने के लिए नियुक्त किया आपको। अतः आपकी जमाअत से सम्बंधित होने वाले प्रत्येक अहमदी को इस स्तर को अपने सामने रखने की आवश्यकता है। इबादुर्रहमान के विषय में, जैसे कि अल्लाह तआला ने आयत में फ़रमाया कि يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا अर्थात- धरती पर शांति एंव प्रतिष्ठा तथा विनम्रता के साथ, और बिना घमंड के चलते हैं।

अतः रमज़ान, जिसमें अल्लाह तआला यह शुभ सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा हमें देता है कि इसमें नर्क के द्वार बन्द कर दिए जाते हैं तथा जन्नत के द्वार खोल दिए जाते हैं तथा अल्लाह तआला भी बन्दों के अधिक निकट आ जाता है। अल्लाह तआला तो हर समय हर एक स्थान पर उपस्थित है। अल्लाह तआला के नीचे वाले आसमान पर आने का अभिप्राय यह है कि नेक कर्मों का प्रतिफल बढ़ाकर देता है, दुआओं को क़बूल करता है। अतः हर ईमान का दावा करने वाले को, हर एक अहमदी को, जो वास्तविक मुसलमान है जिसने रहमान का बन्दा बनने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की बैअत की है, आत्म-निरीक्षण करते हुए, विनयता दिखाते हुए, घमंड को शून्य करते हुए अपने समाज में, अपने घर में, अपने आस पास, झगड़ों एंव द्वेषों को नष्ट करने का प्रयास करते हुए, अमन एंव शांति को फैलाना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस विषय पर अपना नमूना स्थापित करके दिखाया और विभिन्न अवसरों पर उपदेश भी दिए। आँहज़रत सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे फ़रमाया है कि इस सीमा तक विनम्रता धारण करो कि कोई किसी पर गर्व न करे।

एक बार एक यहूदी ने हज़रत मूसा की बड़ाई साबित करने का प्रयास किया तो एक मुसलमान ने कठोरता पूर्ण कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान सबसे ऊपर है। इस पर वह यहूदी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर निवेदन करता है कि इसके द्वारा मेरे दिल को ठेस लगी है तो समस्त नबियों के सरदार ने फ़रमाया कि मुझे मूसा पर प्राथ्मिकता न दो। यह है वह महान सुन्दर नमूना जिसके द्वारा समाज में शांति स्थापित होती है। अतः यह है वह जवाब उन लागों के लिए भी जो इस शांति एंव सदभावना के दूत पर आरोप लगाते हैं कि आपके कारण संसार की शांति भंग हो रही है। और यह उन लोगों के लिए भी नमूना है एंव उदाहरण है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं परन्तु हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का दावा करते हैं, इस समय इस संसार में उन आरोप लगाने वालों के आरोपों को ध्वस्त करने का दायित्व हमारा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि घमंड से बचो, क्यूँकि घमंड हमारे ख़ुदा वन्द की दृष्टि में बड़ा घृणित है। एक व्यक्ति जो अपने भाई की बात को शांति पूर्वक सुनना नहीं चाहता और मुंह फेर लेता है, उसने भी घमंड में भागीदारी की है। यह प्रयास करो कि कोई अंश घमंड का तुममें न हो ताकि नष्ट न हो जाओ और ताकि तुम अपने परिवार सहित मुक्ति प्राप्त करो। ख़ुदा की ओर झुको और जितनी एक मुनष्य किसी से मुहब्बत कर सकता है तुम उसके साथ करो अर्थात ख़ुदा से करो। जितनी एक मनुष्य किसी से मुहब्बत कर सकता है अथवा प्रेम करना सम्भव है, तुम उससे करो और जितना एक मनुष्य किसी से डर सकता है तुम अपने ख़ुदा से डरो। पाक दिल हो जाओ और पाक इरादा तथा ग़रीब और मिसकीन और बेशर ता तुमपर रहम हो। अतः यह वह स्थिति है जो हममें से प्रत्येक को अपने भीतर उत्पन्न करनी चाहिए। इन दिनों में इस प्रयास के साथ अपने हर एक घमंड को नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। सलामती फैलाने का प्रयास करना चाहिए और इसके लिए दुआओं की ओर भी बड़ा ध्यान देना चाहिए। केवल स्वार्थ न हो और लोभ न हो कि स्वार्थ है तो अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हो गए। बल्कि फ़रमाया कि- और निष्ठा पूर्वक उसकी ओर झुक जावे, अपनी अभिलाषा प्रस्तुत न करे और निष्ठा के साथ उसकी ओर झुक जावे, जो इस प्रकार झुकता है उसे कोई कठिनाई नहीं होती और हर एक समस्या से स्वंय उसके लिए रास्ता निकल आता है जैसे कि वह स्वंय फ़रमाता है وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ इस स्थान पर रिज़्क़ का अभिप्राय केवल रोटी नहीं, बल्कि सम्मान, ज्ञान आदि सारी बातें हैं जिनकी मनुष्य को आवश्यकता है, इसमें विद्यमान हैं। ख़ुदा तआला के साथ जो तनिक भी सम्बंध रखता है वह कभी नष्ट नहीं होता।

अतः ये दिन जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पाक तबदीलियों के पैदा करने के और दुआ की क़बूलियत के, अल्लाह तआला ने हमें प्रदान किए हैं उनमें इस ओर ध्यान देने की आवश्कयता है। जिस जिसको, जिस जिस बात पर गर्व है अथवा जो चीज़ हमें हमारी विनम्रता को बढ़ाने में बाधक है अथवा जो चीज़ हमारे वातावरण में हमारे कारण व्याकुलता तथा उपद्रव का

कारण बन सकती है, उसे हमें अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हुए, उससे सहायता मांगते हुए दूर करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हमारा अस्तित्व हर स्थान पर शांति फैलाने वाला अस्तित्व बन जाए, न कि व्याकुलता एंव उपद्रव फैलाने का कारण। अल्लाह तआला ने कर्त्तव्यों का निर्वाह, सद्भावना फैलाने का विस्तार तथा घमंड से बचने के लिए दूसरे स्थान इन शब्दों में आदेश दिया। फ़रमाया कि وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۴:۳۶ अर्थात- अल्लाह की इबादत करो तथा किसी वस्तु को उसका साझीदार न ठहराओ और माता-पिता के साथ भलाई करो और निकट सम्बंधियों से और अनाथों से और निर्धन लोगों से और नातेदार पड़ौसियों से और उन पड़ौसियों से भी जो नातेदार न हों तथा अपने साथ उठने बैठने वालों से और यात्रियों से और उनसे भी जिनके तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए। निस्सन्देह अल्लाह उसको पसन्द नहीं करता जो अभिमानी और डींगें मारने वाला हो।

इस आयत में अल्लाह तआला की इबादत और शिर्क से रोकने के पश्चात कुछ कर्त्तव्यों की ओर ध्यान दिलाया गया है। रमज़ान जहाँ एक ओर इबादतों की ओर ध्यान दिलाने का महीना है वहीं समाज की प्रति कर्त्तव्यों के निर्वाह की ओर ध्यान दिलाने का भी महीना है। अतः इन दिनों में इन कर्त्तव्यों का निर्वाह भी एक मोमिन का दायित्व है और इन दिनों में यदि आदत पड़ जाए तो वास्तव में तो यह निर्वाह सदा के लिए है जो इंसान को करनी चाहिए इन कर्त्तव्यों के प्रति। लेकिन यह महीना ऐसा है जिसमें हम अज़्यस्त हो सकते हैं। यदि यह निर्वाह नहीं तो केवल इबादतें एक मोमिन को इन समस्त लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं कराती जो रमज़ान का उद्देश्य हैं। वास्तविक उद्देश्य तो यह है कि ये पाक बदलाव जो हम पैदा करें उनको जीवन का अंश भी बनाएँ। एक तो इबादतें हैं, और इबादतें जब हम इस महीने में करें तो फिर सदा के लिए जीवन का अंश बनाएँ। कर्त्तव्यों का निर्वाह है, उनकी ओर हम इस महीने में ध्यान दें तो फिर सदा के लिए जीवन का अंश बनाएँ। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, एक रिवायत में आता है कि आप बन्दों के हक़ के लिए, निर्धन एंव दुर्बल लोगों की सहायता के लिए इन दिनों में विशेष रूप से अपने हाथों को इतना खोलते थे कि, वर्णन किया जाता है कि आपकी उदारता तेज़ आँधी से भी बढ़ जाती थी। सामान्य प्रस्थितियों में भी आपकी दानशीलता का स्तर इतना ऊँचा था कि कोई अन्य उस तक नहीं पहुंच सकता। तो फिर रमज़ान में इस उदारता का उदाहरण देने के लिए तेज़ आँधी की जो उपमा दी गई है उससे बढ़कर कोई उपमा नहीं हो सकती। तो इस प्रकार यह दुर्बल लोगों के हक़ की अदायगी है जिसका आपने उच्चतम नमूना क़ायम फ़रमाया।

अतः अल्लाह तआला हर उपासक से इन उच्च नैतिक मूल्यों की आशा करता है तथा इनका आदेश देता है जो विनम्रता पूर्वक एक मोमिन को निर्वाह करने चाहिएँ। इन हक़ों की अदायगी कोई यह न समझे कि बहुत बड़ी कोई बड़ाई है। कर्त्तव्यों का निर्वाह कोई बड़ाई नहीं बल्कि हर मोमिन का दायित्व है और इन हक़ों की अदायगी से ही इबादतें भी क़बूल होती हैं। जैसा कि आयत से स्पष्ट है कि इन कर्त्तव्यों में मात-पिता के हक़ हैं, रिश्तेदारों के हक़ हैं, अनाथों के हक़ हैं, दीन दुखियों के हक़ हैं, निकट के रिश्तेदार पड़ौसियों के हक़ हैं, अन्य पड़ौसियों के हक़ हैं। विभिन्न अवसरों पर साथ रहने वाले, उठने बैठने वालों के हक़ हैं, यात्रा करने वालों के भी हक़ हैं तथा जो हमारे आधीन हैं, जो हम पर आश्रित हैं, उनके भी हक़ हैं। इस प्रकार इस एक आयत में समस्त मानव जाति की चिंता करने और इनके प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह करने की ओर ध्यान दिला दिया और बल्कि आदेश दे दिया।

माता-पिता के हक़ के विषय में क़ुरआन करीम में अन्य स्थान पर भी वर्णन है। वृद्धावस्था में उनकी सेवा करना, उनका ध्यान रखना, संतान का दायित्व है और यह कोई उपकार नहीं है। रिश्तेदारों के हक़ हैं इस विषय में यदि पति पत्नि एक दूसरे के रिश्तेदारों के हक़ अदा करें, सुसरालियों के हक़ अदा करते रहें, जिसके विषय में अल्लाह तआला का जी आदेश है कि अपने सगे रिश्तों का जी ध्यान रखो तो घरों के बहुत से झगड़े समाप्त हो जाते हैं और प्यार और मुहब्बत का वातावरण पैदा हो जाता है। जिन जिन घरों में इस प्रकार की समस्याएँ हैं, बहुत सारे मामले आते हैं, इनमें विचार करना चाहिए इन दिनों में विशेष रूप से, और ज़िद एंव अभिमान को छोड़कर अपने घरों को बसाने का प्रयास करना चाहिए।

फिर अनाथों की देख भाल भी एक बड़ा महत्व पूर्ण काम है उनको समाज का कार्यशील अंग बनाने का प्रयास करना चाहिए। उनके हक़ की अदायगी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इतना महत्व दिया है कि फ़रमाया कि- मैं और अनाथ की पालन पोषण करने वाले जन्नत में इस प्रकार होंगे, जिस प्रकार दो उंगलियाँ हैं समीप, अर्थात हमारा बड़ा निकट का

साथ होगा। अतः इस महत्व को जमाअत के लोगों को सदा अपने सम्मुख रखना चाहिए और अनाथों की सेवा के लिए ख़र्च करना चाहिए, जमाअत में भी इसके लिए प्रबन्ध है। फिर दुर्बलों एंव निर्धनों के हक़ हैं। जिसमें शिक्षा के लिए आवश्यकताएँ हैं, उपचार की आवश्यकताएँ हैं, शादी में होने वाले व्यय हैं। जमाअत में इन सब ख़र्चों को पूरा करने के लिए अलग से फ़ंड भी जारी हैं, उनमें भी समृद्ध लोगों को, जिनमें सामर्थ्य है जमाअत के प्रबन्ध के आधीन रहते हुए व्यय करना चाहिए।

अतः यह वह सुन्दर शिक्षा है जो मुहब्बत और प्यार को फैलाती है, संधि एंव सद्भावना का आधार बनाती है, वातावरण में शांति एंव सलामती पैदा करती है। फिर साथियों एंव यात्रा करने वालों के हक़ों की अदायगी का आदेश है। इन शब्दों में हक़ की अदायगी को पति पत्नि के हक़ की अदायगी पर भी प्राथमिकता दे दी और अपने दोस्तों, सहपाठियों, साथ काम करने वालों पर भी फैला दिया और अफ़सरों तथा आधीन लोगों को भी इनमें शामिल कर लिया। फिर وما ملكت ايمانكم कहकर हर प्रकार के आधीनों तथा लोगों के हक़ की ओर ध्यान दिला दिया और ये सारे हक़ अदा करके फ़रमाया कि यदि ये हक़ अदा नहीं कर रहे तो तुम्हारे भीतर घमंड तथा अहंकार पाया जाता है जो अल्लाह तआला को बड़ा अप्रिय है।

इस प्रकार यह इस्लाम की सुन्दर शिक्षा है दुनिया में अमन स्थापित करने, सलामती फैलाने और हर प्रकार के समुदाय के अधिकारों की सुरक्षा की। अतः ये दिन जो हमें मिले हैं, जो हमें ख़ुदा तआला के निकट करने के दिन हैं बल्कि ख़ुदा तआला स्वंय इन दिनों में हमारे निकट आ गया है तथा उन लोगों को वरदान देना चाहता है जो उसके भी हक़ अदा करें, जो इबादत के भी हक़ अदा करें तथा उसके बन्दों के भी हक़ अदा करें। अतः जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- हमें विनम्रता धारण करते हुए इन सभी प्रकार के हक़ों को अदा करने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। ये दिन रमज़ान के एक विशेष वातावरण के कारण अल्लाह तआला का हक़ अदा करने की ओर भी ध्यान दिलाते हैं तथा अन्य नेकियाँ भी करने की ओर ध्यान दिलाते हैं। इनके द्वारा हमें अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यदि हमने अपनी इबादतों को क़बूल कराना है तो अल्लाह तआला के बन्दों के हक़ अदा करने की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि तुम चाहते हो कि आसमान पर ख़ुदा तुमसे प्रसन्न हो तो परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई। तुम आधीन लोगों पर तथा अपनी पत्नियों पर और अपने निर्धन भाईयों पर दया करो ताकि आसमान पर तुम पर भी दया हो। तुम सचमुच उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए। आपने एक स्थान पर फ़रमाया- जो कोई अपना जीवन लज्जा करना चाहता है उसे चाहिए कि नेक कामों की तबलीग़ करे और प्राणियों को लाभ पहुंचाए। अल्लाह तआला हमें अपनी इबादतों के साथ समस्त दूसरे हक़, जो बन्दों के हक़ हैं, वे भी अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हम वास्तविक रंग में रहमान ख़ुदा के बन्दे बन जाएँ और अल्लाह तआला की निकटता को इस रमज़ान में पहले से बढ़कर पाने वाले हों और फिर सदा के लिए अपने जीवन के अंश बनाने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रमा हिदायत बीबी साहिबा पत्नि मुकर्रम मुहम्मद अहमद साहब काला अफ़ग़ानाँ दरवेश मरहूम जिनकी क़ादियान में 4 जून 2015 को मृत्यु हो गई थी, इसी प्रकार मौलवी मुहम्मद अहमद साक़िब साहब वाक़िफ़े ज़िन्दगी, भूतपूर्व उस्ताद जामिअः अहमदियः रबवा जिनकी 18 मई को 98 साल की आयु में रबवा में मृत्यु हो गई थी। दोनों मरहूमों के शुभ लक्षणों तथा सेवाओं का वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और उनकी मग़फ़िरत तथा दर्जों की बुलन्दी के लिए दुआ फ़रमाई।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 26.06.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*